B.A Part-3 Paper-7 (Clinical Psychology) Study material
Topic- Clinical Utilities & Demerits of Rorschach Test (RT).
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology Vaishali Mahila College, Hajipur)

रोर्शाक परीक्षण (Rorschach test) के कुछ नैदानिक उपयोगिताएं (clinical utilities) तथा अवगुण (demerits) है। रोर्शाक परीक्षण की प्रमुख नैदानिक उपयोगिताएं निम्नांकित है-

1. रोर्शाक परीक्षण द्वारा नैदानिक मनोवैज्ञानिक रोगियों के व्यक्तित्व के बारे में जो आंकड़ा प्राप्त कर पाते हैं, वे अनुक्रिया सेट (response set) से स्वतंत्र होते हैं। अतः उन पर अधिक-से-अधिक भरोसा किया जाता है।

2. रोर्शाक परीक्षण द्वारा रोगी के बौद्धिक (intellectual) तथा अबौद्धिक शीलगुण (non-intellectual) दोनों के ही बारे में ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

3. रोशार्क परीक्षण द्वारा नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को रोगी की लैंगिक अभिरुचि (sexual areas) के बारे में स्पष्ट पता चलता है। Rorschach card के कुछ क्षेत्र इस रूप में सुनिश्चित किए गए हैं। इनके प्रति की गयी अनुक्रियाओं से रोगी की ऐसी अभिरुचि का स्पष्ट पता चल जाता है। व्यक्तित्व प्रश्नावलियों के एकांश के अर्थ स्पष्ट रहने से रोगी के लैंगिक अभिरुचि

(sexual interest) के बारे में पता लगाना संभव नहीं हो पाता है। इस तरह की अभिरुचि के माध्यम से नैदानिक मनोवैज्ञानिकों को नैदानिक मूल्यांकन (clinical evaluation) तथा नैदानिक निर्णय (clinical judgement) करने में विशेष मदद मिलती है।

इनके बावजूद RT परीक्षण के कुछ अवगुण है जो निम्नांकित हैं-

1. RT में 10 कार्ड होते हैं और प्रत्येक कार्ड पर एक या एक से अधिक अनुक्रिया (response) रोगी देता है। यहां रोगी द्वारा दी जाने वाली

अनुक्रिया की संख्या कोई सीमित नहीं है। परिणाम स्वरूप इस परीक्षण से मिलने वाला प्राप्तांक (score) अविश्वसनीय होता है और उनका वितरण वैषम्य (skewed) भी होता है। इससे परीक्षण की विश्वसनीयता (reliability) तथा वैधता (validity) पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

2. RT से संबंधित किए गए शोध कार्यों को ध्यान में रखते हुए कुछ नैदानिक मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि परीक्षण सभी उद्देश्यों के लिए समान रूप से वैध (valid) नहीं है। जैसे इस परीक्षण द्वारा रोगी की

आवश्यकता एवं संघर्ष के क्षेत्रों की पहचान ठीक से नहीं होती है।

3. इस परीक्षण को नैदानिक मनोवैज्ञानिकों ने एक तरह का नियंत्रित साक्षात्कार (controlled Interview) माना है। जहां परीक्षण स्वयं महत्वपूर्ण नहीं होता है बल्कि इसकी उपयोगिता चिकित्सक के कौशल (skill)एवं संवेदनशीलता (sensitivity) पर निर्भर करता है। यदि चिकित्सक स्वयं योग्य एवं कौशलयुक्त नहीं है तो परीक्षण की नैदानिक उपयोगिता (clinical utility) लगभग समाप्त हो जाती है।

4. इस परीक्षण का प्राप्तांक-लेखन (scoring) कई चिकित्सकों के अच्छे प्रयासों के बावजूद भी वस्तुनिष्ठ नहीं हो सका है और प्राप्तांक-लेखनकर्ता (scorer) की अपनी इच्छा का प्रभाव उस पर काफी पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि अगर एक Rorschach protocol की व्याख्या यदि कई चिकित्सकों द्वारा की जाती है तो उनमें समरुपता न होकर विभिन्नता हो जाती है जिससे वे लोग एकजुट होकर रोगी के व्यक्तित्व के बारे में किसी निश्चित निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाते हैं।

इन अवगुणों के बावजूद रोर्शाक परीक्षण का उपयोग नैदानिक मनोविज्ञान में काफी अधिक हुआ है और आज भी हो रहा है। रोर्शाक परीक्षण के वर्णन किए गए कई अवगुणों में प्रथम अवगुण को दूर करने के ख्याल से तथा स्याही के धब्बे वाली परीक्षणों (ink blot tests) के मनोमितिक गुणों (psychometric qualities) को उन्नत बनाने के ख्याल से Holtzman ने एक दूसरा परीक्षण बनाया जिसे होल्जमैन स्याही-धब्बा परीक्षण (Holtzman Ink blot Test or HIT) कहा गया। इस परीक्षण के दो

फॉर्म है और प्रत्येक फॉर्म में 45-45 कार्ड हैं जिसपर स्याही के धब्बे बने होते हैं। दोनों फार्म चूकी तुल्य (equivalent) हैं, अतः किसी एक का भी प्रयोग करके व्यक्ति की माप की जा सकती है। प्रत्येक कार्ड के प्रति अधिक-से-अधिक एक अनुक्रिया रोगी को करना होता है। इसका प्राप्तांक-लेखन 22 श्रेणियों में बांटकर किया जाता है। रोगी के उम्र एवं मनश्चिकित्सीय स्तर (psychiatric status) के अनुकूल कई तरह के मानक (norms) उपलब्ध हैं। इतना होने के बावजूद व्यक्तित्व मापन में इसकी

लोकप्रियता उतनी नहीं है जितनी की रोर्शाक परीक्षण (RT) की है।